JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च शिक्षा संस्थानों में आचार संहिता पर अध्ययन

दीपिका

शोधार्थिनी

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Deepikakureel1989@gmail.com

प्रो० (डा०) सुनीता सिंह

प्रोफेसर

नारी शिक्षा निकेतन पी०जी० कालेज
लखनऊ

dsunitasingh@gmail.com

सारांश

इस लेख का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों में नैतिक आचरण के लिए व्यवहार के नियमों का एक ढाँचा प्रस्तुत करना है। निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, आचार संहिता को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करते समय छात्रों को आचार संहिता का ध्यान रखना चाहिए। इसमें निदेशक, प्रमुख, प्रोफेसर, अन्य कर्मचारी और शिक्षा प्रणाली में शामिल अन्य लोग भी शामिल होने चाहिए। सभी सदस्यों से अपेक्षा है कि वे लागू संस्थान की नीतियों और समझौतों में निर्धारित आचरण, ईमानदारी और जवाबदेही के मानकों के अनुसार कार्य करें, जैसा कि आचार संहिता में विस्तार से बताया गया है। विशिष्ट दिशा-निर्देश देने के बजाय, आचार संहिता कुछ व्यापक सिद्धांतों को प्रस्तुत करती है। आचार संहिता के तीन बुनियादी नैतिक सिद्धांत हैं - विविधता, लोगों का सम्मान और व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक जवाबदेही। इस शोध कार्य में मुख्य रूप से आचार संहिता का महत्व, उनके उद्देश्य और प्रकार तथा नैतिकता को बेहतर बनाने की रणनीतियाँ शामिल हैं। परिचय इस शोध पत्र का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों में आचार संहिता का विश्लेषण करना है। यह पत्र उन नैतिक मानकों पर चर्चा करेगा जिन्हें शैक्षणिक संस्थानों को पूरा करना चाहिए, आचार संहिता और नैतिकता का पालन करने का महत्व और ऐसे मानकों की अनदेखी के परिणाम। यह उन विभिन्न नीतियों और प्रक्रियाओं की भी समीक्षा करेगा जो उच्च शिक्षा संस्थान छात्रों और शिक्षकों के लिए एक सुरक्षित और नैतिक वातावरण सुनिश्चित करने के लिए लागू करते हैं। अंत में, यह पत्र उच्च शिक्षा संस्थानों में आचार संहिता के महत्व और उन्हें कैसे बेहतर बनाया जा सकता है, का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करेगा।

मुख्य शब्द- उच्च शिक्षा, शैक्षणिक संस्थान, आचार संहिता

प्रस्तावना

इस रिसर्च पेपर का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों में आचार संहिता का विश्लेषण करना है। इस पेपर में यह देखा जाएगा कि शिक्षा संस्थानों को किन नैतिक मानकों का पालन करना चाहिए, आचार संहिता और नैतिकता का पालन क्यों ज़रूरी है और इन मानकों की अनदेखी के क्या परिणाम हो सकते हैं। इसमें यह भी बताया जाएगा कि उच्च शिक्षा संस्थान छात्रों और शिक्षकों के लिए सुरक्षित और नैतिक माहौल सुनिश्चित करने के लिए कौन सी नीतियां और प्रक्रियाएं अपनाते हैं। अंत में, यह पेपर उच्च शिक्षा संस्थानों में आचार संहिता के महत्व का गहन विश्लेषण करेगा और बताएगा कि इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है।

परिभाषा

आचार संहिता उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों, कर्मचारियों और शिक्षकों से अपेक्षित मानकों और व्यवहार के लिए दिशा-निर्देश हैं। ये दिशा-निर्देश संस्थान की अखंडता और प्रतिष्ठा की रक्षा करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी के साथ सम्मान और ईमानदारी से व्यवहार किया जाए। आचार संहिता न केवल संस्थान के लिए बल्कि छात्रों, कर्मचारियों और शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण है, जिन्हें इनका पालन करना होता है। ये सभी संबंधित पक्षों के लिए एक सुरक्षित और उत्पादक सीखने का माहौल प्रदान करते हैं।

महत्त्व

उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए आचार संहिता बहुत ज़रूरी होती है। ये सभी पक्षों के बीच बातचीत और व्यवहार के लिए दिशा-निर्देश देती हैं। इससे छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए एक सुरक्षित और सम्मानजनक सीखने का माहौल बनता है। इसके अलावा, यह सुनिश्चित करती है कि सभी के साथ सम्मान से पेश आया जाए और संस्थान की प्रतिष्ठा खराब न हो। साथ ही, आचार संहिता मुश्किल नैतिक स्थितियों में मार्गदर्शन देती है और हितों के टकराव को रोकने में मदद करती है। नीतियां और प्रक्रियाएं: अधिकांश उच्च शिक्षा संस्थानों में आचार संहिता का पालन सुनिश्चित करने के लिए नीतियां और प्रक्रियाएं होती हैं। ये नीतियां और प्रक्रियाएं हर संस्थान में अलग-अलग होती हैं, लेकिन आमतौर पर इनमें एक औपचारिक आचार संहिता शामिल होती है, जैसे कि अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ़ यूनिवर्सिटी प्रोफेसर्स का एथिक्स कोड। इसके अलावा, साहित्यिक चोरी, शैक्षणिक धोखाधड़ी और यौन उत्पीड़न जैसी विशिष्ट समस्याओं से निपटने के लिए भी नीतियां और प्रक्रियाएं हो सकती हैं।

आचार संहिता का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी के साथ सम्मान और निष्पक्षता से व्यवहार किया जाए, शिक्षक ज्ञानवान और सक्षम हों, व्यक्ति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझें, वे अवसरों और चुनौतियों के लिए अच्छी तरह से तैयार रहें, उनका व्यवहार अच्छा हो, वे नैतिक निर्णय ले सकें, वे प्रभावी संचार को समझें और वे व्यवहार के सिद्धांतों और नैतिक मानकों को स्थापित करें।

उच्च शिक्षा में शामिल लोगों के लिए अपने शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रयासों में सफल होने के लिए कुछ आचार संहिता का पालन करना ज़रूरी है। ईमानदारी को नैतिक व्यवहार का आधार माना जाता है और यह इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। असाइनमेंट और प्रोजेक्ट पर काम करते समय, छात्रों को अपने खुद के विचार इस्तेमाल करने चाहिए और दूसरों के विचारों का उपयोग करते समय उनके स्रोत का उल्लेख करना चाहिए।

शैक्षणिक ईमानदारी का उल्लंघन करने पर गंभीर परिणाम हो सकते हैं, यहाँ तक कि उन्हें निकाल भी दिया जा सकता है।

अन्य महत्वपूर्ण गुण हैं लगन, कुशलता, कर्तव्यपरायणता, मिलनसारिता और सौम्यता, तथा नैतिकता और ईमानदारी। सफल होने के लिए, व्यक्ति को अपने काम और दूसरों के साथ अपने संबंधों में ये गुण दिखाने चाहिए। दैनिक जीवन में नैतिकता और ईमानदारी अपनाने से व्यक्ति अपने लक्ष्य प्राप्त कर सकता है और अपने जीवन की गुणवत्ता बढ़ा सकता है।

सच्चाई उच्च शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में काम करने वालों के लिए एक ज़रूरी गुण है। सच्चाई का प्रतिनिधित्व करना, तथ्य बताना, बातचीत में ईमानदार रहना और दिल से ईमानदारी से काम करना, ये सभी सच्चाई के पहलू हैं। जब प्रोफेसर छात्रों को रिसर्च प्रोजेक्ट देते हैं, तो उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि फील्ड विजिट, नोट्स, सर्वे और इंटरव्यू से इकट्ठा की गई जानकारी सटीक हो। यह ज़िम्मेदारी किसी भी पद या स्थिति में काम करने वाले कर्मचारियों पर भी लागू होती है, जो अपने वरिष्ठों, अधीनस्थों या साथियों को जानकारी देते हैं। सच्चाई दिखाने से प्रोफेशनल क्षमता बढ़ती है, बेहतर परिणाम और प्रशंसा मिलती है और शिक्षा प्रणाली अधिक सफल होती है।

न्याय और स्वायत्तता उच्च शिक्षा में लोगों को संतुष्टि देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी को बिना किसी भेदभाव के समान अधिकार और अवसर मिलने चाहिए। प्रशासकों, प्रोफेसरों या कर्मचारियों द्वारा लिए गए निर्णयों में, उनके अपने विचार या दूसरों के विचारों को भी शामिल किया जा सकता है। जब शोधार्थी अपना असाइनमेंट पूरा कर रहे हों, तो उन्हें अपनी समय-सीमा तय करने की स्वायत्तता दी जानी चाहिए। सही तरीके और उचित दिशा में न्याय और स्वायत्तता प्रदान करना सफलता के लिए आवश्यक है।

आचार संहिता लोगों को अपने काम की ज़िम्मेदारियों को व्यवस्थित और सुव्यवस्थित तरीके से पूरा करने में मदद करता है। गोपनीयता मुख्य रूप से नौकरी के कामों से जुड़ी होती है। शैक्षणिक संस्थानों में, छात्रों की सीखने की क्षमता अलग-अलग होती है। जब उन्हें पढ़ाई में मुश्किलों और रुकावटों का सामना करना पड़ता है, तो वे सलाह और सुझाव के लिए अपने प्रोफेसरों और पर्यवेक्षकों से बात करते हैं। इन बातचीत के दौरान, प्रोफेसर बातचीत को गोपनीय रखते हैं। इसके अलावा, जब विभाग प्रमुख और प्रोफेसर चर्चा करते हैं, तो वे गोपनीयता बनाए रखने के लिए आमतौर पर दरवाज़े बंद कर देते हैं। प्रोफेसर आमतौर पर अपने विषय पढ़ाने और छात्रों के असाइनमेंट की ग्रेडिंग पर ध्यान देते हैं। वे अपने काम से संबंधित कोई भी जानकारी अपने सहयोगियों के साथ साझा नहीं करते। कुछ मामलों में, छात्र अपने ग्रेड और असाइनमेंट के बारे में अन्य जानकारी को भी गोपनीय रखते हैं और इसे अन्य छात्रों से नहीं बताते। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि संबंधों में गोपनीयता बनाए रखना एक महत्वपूर्ण आचार संहिता है, जो लोगों को अपने काम की ज़िम्मेदारियों को व्यवस्थित तरीके से पूरा करने में मदद करता है।

नैतिकता बढ़ाने के तरीके

व्यक्ति के लिए नैतिकता को लागू करने और उसमें सुधार करने की लगातार कोशिश करना बहुत ज़रूरी है। ऐसा करने के लिए ये कदम उठाए जा सकते हैं:-

1. **संगठनात्मक रणनीति में नैतिक व्यवहार को मुख्य स्थान देना:** व्यक्तियों को नैतिक व्यवहार को प्राथमिकता देनी चाहिए। ऐसा करने के लिए, उन्हें एक आचार संहिता बनानी चाहिए जो नैतिक व्यवहार को बढ़ावा दे। इसके अलावा, नैतिक व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट लक्ष्य, मानक और अपेक्षाएं निर्धारित की जानी चाहिए। निर्णय लेते समय इस आचार संहिता का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि निर्णय लेना किसी भी उच्च शिक्षा संस्थान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह व्यावसायिक नैतिकता को दर्शाना चाहिए। नैतिक व्यवहार को एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता बनाकर, समझदारी भरे और लाभकारी निर्णय लिए जा सकेंगे।
2. **मार्गदर्शन दिखाना:** विभाग प्रमुखों और प्रोफेसरों के लिए अपने नेतृत्व कौशल दिखाना बहुत ज़रूरी है। ऐसा करने से न केवल उन्हें बेहतर प्रोफेशनल स्टैंडर्ड अपनाने में मदद मिलेगी, बल्कि वे अन्य काम और गतिविधियाँ भी प्रभावी ढंग से कर सकेंगे। नेतृत्व को दूसरों को सही रास्ता दिखाना, उनके सवालों के जवाब देना, रचनात्मक विचार और सुझाव देना, विवादों को ठीक से सुलझाना और काम का माहौल अच्छा रखना चाहिए। इसके अलावा, उन्हें नवीनतम तकनीकों और रणनीतियों की जानकारी रखनी चाहिए, जिससे नैतिकता और पूरी शिक्षा प्रणाली में सुधार हो सके।
3. **छात्रों को गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना:** शिक्षा संस्थानों का लक्ष्य अपने छात्रों के विकास और उन्नति को बढ़ावा देना है। उन्हें न केवल ज्ञान प्राप्त करने में मदद करना, बल्कि पेशेवर कौशल, मूल्य और नैतिक मानकों का विकास भी करना। ऐसा करने के लिए, छात्रों को विभिन्न गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना ज़रूरी है। सेमिनार और कार्यशालाएं छात्रों को स्वयंसेवी गतिविधियों में भाग लेने और कार्य करने का अवसर देती हैं, जिससे उनके प्रस्तुतीकरण और संचार कौशल में सुधार होता है और उनका आत्मविश्वास तथा पेशेवर ज्ञान बढ़ता है। इसे आसान बनाने के लिए, उच्च शिक्षा संस्थानों को छात्रों की भागीदारी के लिए अवसर प्रदान करने चाहिए।
4. **सदस्यों को सहायता प्रदान करना:** स्टाफ और शिक्षक दोनों को नैतिकता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक विभिन्न रणनीतियों और तकनीकों के बारे में पता होना चाहिए। स्टाफ का समर्थन करने और नैतिकता के विकास को बढ़ावा देने के लिए, कार्यस्थल को इस तरह से व्यवस्थित किया जाना चाहिए कि यह उन्हें अपना काम करने के लिए प्रोत्साहित करे। कार्यस्थल में आवश्यक बुनियादी ढाँचा, संसाधन, उपकरण, तकनीक, मशीनरी, सुविधाएं और अन्य आवश्यक सुविधाएं होनी चाहिए। जब ये सुविधाएं उपलब्ध हो जाएंगी, तो लोग न केवल अपना काम ठीक से कर पाएंगे, बल्कि आचार संहिता में भी सुधार ला सकेंगे।
5. **नियमों को लागू करना:** शिक्षा संस्थानों के लिए ऐसे नियम बनाना ज़रूरी है जिनका सभी सदस्य पालन करें। जब नियम का पालन होता है, तो सदस्य अपने काम व्यवस्थित तरीके से कर पाते हैं, अनुशासन बनाए रख पाते हैं और अच्छे व्यवहार को बढ़ावा दे पाते हैं। एक मुख्य नियम यह होना चाहिए कि सभी सदस्य एक-दूसरे के साथ विनम्रता और सम्मान से पेश आएं। इसके अलावा, उन्हें अपने काम और दूसरों के साथ बातचीत में ईमानदारी और अखंडता दिखानी चाहिए। समय के साथ नियमों में बदलाव करना पड़ सकता है, लेकिन कोई भी बदलाव लोगों और संस्थानों दोनों के हित में होना चाहिए।
6. **नैतिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता का निर्धारण**: किसी नैतिक कार्यक्रम की सफलता और उसके अपेक्षित परिणामों को मापने के लिए रणनीतियाँ बनाना ज़रूरी है। ऐसे कार्यक्रम न केवल भारत में बल्कि अन्य देशों में भी लागू किए जा रहे हैं, और इनका उद्देश्य सदस्यों में प्रोफेशनल एथिक्स की समझ और ज्ञान बढ़ाना है। उदाहरण के लिए, जब लोगों को नौकरी के लिए भर्ती किया जाता है या उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों

में दाखिला दिया जाता है, तो उनके लिए प की जानकारी होना महत्वपूर्ण होता है। लोगों को प्रोफेशनल एथिक्स के महत्व के बारे में सिखाने के लिए योग्य और सक्षम ट्रेनर नियुक्त किए जाते हैं। इसलिए, एथिक्स प्रोग्राम की प्रभावशीलता को मापने के तरीकों का उपयोग करके, बेहतर नैतिक मानकों को बढ़ावा देना संभव है।

विश्लेषण

उच्च शिक्षा संस्थानों में आचार संहिता का महत्व बहुत ज़्यादा होता है। यह सभी संबंधित लोगों की सुरक्षा और संस्थान की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए ज़रूरी है। इसके अलावा, ये दिशानिर्देश यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी के साथ सम्मान से व्यवहार किया जाए और हितों के टकराव से बचा जाए। हालांकि, उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए यह ज़रूरी है कि वे यह सुनिश्चित करें कि उनके आचार संहिता के नियम समय-समय पर अद्यतन रहें और उनकी नियमित समीक्षा होती रहे। साथ ही, संस्थानों को यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए कि सभी लोग आचार संहिता को समझें और उसका पालन करें।

निष्कर्ष

अंत में, उच्च शिक्षा संस्थानों में आचार संहिता सभी संबंधित पक्षों की सुरक्षा और संरक्षा के लिए ज़रूरी है। ये दिशानिर्देश यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी के साथ सम्मान से व्यवहार किया जाए और हितों के टकराव से बचा जाए। इसके अलावा, उच्च शिक्षा संस्थानों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके आचार संहिता के नियम समय-समय पर अपडेट हों और उनकी नियमित समीक्षा की जाए। साथ ही, संस्थानों को यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए कि सभी पक्ष आचार संहिता को समझें और उसका पालन करें।

संदर्भ

1. एथिक्स: परिभाषा, क्षेत्र, प्रकृति और उद्देश्य। (2018)। 13 जून, 2020 को nehakubms.wordpress.com से लिया गया

2. हेडबर्ग, सी. (2014)। नैतिक प्रदर्शन में सुधार के पांच तरीके। 14 जून, 2020 को cgma.org से लिया गया

3. अपने व्यावसायिक नैतिकता को कैसे बेहतर बनाएं। (2018)। 14 जून, 2020 को russpeak.com से लिया गया

4. सत्यनिष्ठा। (1997)। 14 जून, 2020 को pacharacter.org से लिया गया

5. वादी, एम और जाकसन, के. (2006)। ईमानदारी का महत्व: निर्धारक कारक

6. नैतिकता के कुछ सुझाव। टार्ट्र विश्वविद्यालय। 13 जून, 2020 को लिया गया